हाईटेक उपकरणों को देंगे 'दिमाग'

मेन्यूफैक्चरिंग व डिजाइन इंडस्ट्री को भारी भरकम मानव संसाधन से निजात मिलेगी

आईआईटी के वैज्ञानिक ऑर्टिफिशियल लर्निंग पर काम कर रहे हैं। इसमें ब्रेन क्रिएटेड मेमोरी से कार्य संचालित करने की योजना है

वरिष्ठ संवाददाता

कानपुर

रोबोट की दुनिया से थोड़ा आगे बढ़कर अब न्यू जनरेशन हाईटेक उपकरणों को दिमाग देकर कारपोरेट जगत की रफ्तार बढ़ाने की तैयारी हो रही है। ऑर्टिफिशियल लर्निंग मशीन (एएलएम) से मैन्यूफैक्चरिंग और डिजाइन जैसी इंडस्ट्री को भारी-भरकम मानव संसाधन से छुटकारा मिल सकता है। आईआईटी में आयोजित 'सिमुलेटेड इवोल्यूशन एंड लर्निंग : सील 2010' में दुनिया भर से आए विशेषज्ञों ने यह संकेत दिए।

आईआईटी में चार दिवसीय सेमिनार के पहले दिन उद्घाटन सत्र में निदेशक संजय जी धांडे ने कहा कि योजना और तकनीकी समन्वय से देश की प्रगति की रफ्तार में और इजाफा हो सकता है।

नए संसाधन

- आईआईटी में आयोजित 'सिमुलेटेड इवोल्यूशन एंड लर्निंग : सील 2010' में दुनिया भर से आए विशेषज्ञों ने यह संकेत दिए

जापान के प्रोफेसर टोसियो फुकडास ने ऑर्टिफिशियल लर्निंग मशीन को बेहद आसान और सुविधाजनक बताया।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर कल्यान मॉय देब ने बताया कि आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिक पिछले दशक से ही ऑर्टिफिशियल लर्निंग पर काम कर रहे हैं। इसमें ब्रेन क्रिएटेड मेमोरी से कार्यों को संचालित करने की योजना है।

उन्होंने बताया कि सियोल में पहली सील कांफ्रेंस हुई थी। इसके बाद केनबरा, जापान, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया और आस्ट्रेलिया आदि देशों में सेमिनार हुआ। सील 2010 में कुल 141 शोध पत्र दुनिया भर के वैज्ञानिक प्रस्तुत करेंगे। इसमें चीन, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, पोलैंड,बेल्जियम, कोरिया, नीदरलैंड, इजराइल आदि देशों के प्रतिनिधि शामिल हैं।



सील की कॉन्फ्रेन्स को आईआईटी निदेशक एसजी गोविन्द धांडे ने सम्बोधित किया।

उद्योग जगत को नहीं रिझा रहा सपना

सिमुलेटेड इवोल्यूशन एंड लर्निंग 2010 में आए ज्यादातर विशेषज्ञों का मानना है कि भारत ही ऑर्टिफिशियल लर्निंग मशीन को लेकर बहुत उत्सुकता नहीं है। क्योंकि भारत में विदेशों से हाईटेक मशीनें आयात करने का रिवाज है लेकिन अपने देश में हो रहे शोध को लेकर भी उद्योग जगत उत्सुक नहीं दिखता। भारत का कारपोरेट जगत तकनीकी को स्वीकार करने में देर करता है।

ऐसी है ऑर्टिफिशियल लर्निंग मशीन

कानपुर। न्यू जनरेशन मशीन में परंपरागत उपकरणों के साथ ही डाटा प्रोग्रामिंग के जरिए ब्रेन तैयार होगा। मशीन खुद यह आकलन कर लेगी कि कैसा डिजाइन तैयार करना है या फिर किस अनुपात में निर्माण का मसाला बनाना है? डिजाइन से लेकर निर्माण तक का समय सब कुछ मशीन के दिमाग में लेटेस्ट डाटा और साफ्टवेयर से फीड होगा। इस मशीन के बाद मानव सुपरवीजन की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।

जागरण 2/12/10

मनुष्य के दिमाग से भी तेज काम करेगी मशीन



सेमिनार में मौजूद वैज्ञानिक।

कानपुर, नगर प्रतिनिधि: वैसे तो मशीनों ने मानव श्रम को प्रभावित किया है लेकिन विकास को देखते हुए आधुनिक मशीनों की जरूरत हर देश को है। इन मशीनों में बौद्धिकता डालने के लिए देश-दुनिया के वैज्ञानिक प्रयासरत हैं।

इसी कड़ी में आइआइटी में सिम्लुटेड, इवोल्यूशन एंड लर्निंग फोरम के तत्वावधान में आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस एसईएएल-2010 में वैज्ञानिकों ने गंभीर चिंतन किया। मशीन और मानव को एक दूसरे का पूरक बनाने के लिए एल्गोरिदम विकसित करने पर जोर रहा। वैज्ञानिकों का दावा था कि शोध कामयाब होंगे तो मनुष्य के दिमाग से भी मशीन तेज काम करेगी। आउटरीच सभागार में आठवीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस की शुरुआत संस्थान के निदेशक प्रो. संजय गोविंद धांडे ने दीप प्रज्जवलित कर की। अतिथियों का स्वागत करते हुए धांडे ने कहा कि संस्थान के खुलने के बाद से ही इस क्षेत्र में कार्य जारी है। मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. कल्याणमय देव ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि मशीन में आर्टीफीशिएल इंटेलीजेंसी विकसित करने के लिए पहली कांफ्रेंस दक्षिण कोरिया में 1996 में हुई। देव ने बताया कि आइआइटी कानपुर रोबोट और मशीन के क्षेत्र में काम कर रहा है। संस्थान ने एक ड्रिलिंग मशीन को विकसित किया है। जिसे सेट कर दिया जाता है और वह आटोमैटिक काम भी करती है। इस मशीन का लाभ लखनऊ में लिया जा रहा है। सिविल इंजीनियरिंग विभाग के संस्थापक प्रो. एमपी कपूर ने बताया कि जो काम इंसान कर सकता है वह मशीन भी कर सकती है। उन्होंने कहा कि मशीन और मानव की सोच में बड़ा फर्क है। मशीन की सोचने की गुणवत्ता को बढ़ाने की तैयारी भी चल रही है।

इस मौके पर डॉ. पार्था चक्रवर्ती, आइआइआइटी के डॉ. बी. यज्ञना नरायण, जापान के डॉ. हारुतोशी ओगाई, इंग्लैंड के डॉ. पीटर फ्लेमिंग आदि ने विचार रखे।

आधुनिक मशीनों का भविष्य

रोबोट और आधुनिक मशीनों का भविष्य बेहतर होगा। रेलगाड़ी की शिड्यूलिंग कंप्यूटर से हो रही है। यह बात कर्माकर एल्गोरिदम विकसित करने वाले पुणे से आए लेबोरेट्री ऑफ कंप्यूटशनल मैथमेटिक्स डॉ. नरेंद्र कर्माकर ने कही। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार आदि मानव से आज का मानव विकसित हो चुका है वैसे ही मशीनों में आर्टीफिशिएल इंटेलीजेंस विकसित करने के दौर जारी है।

आइआइटी में इंटरनेशनल कांफ्रेंस

- मशीन और मानव को पूरक बनाने की कवायद
- देश-दुनिया के वैज्ञानिकों ने किया गंभीर चिंतन
- गणितीय एल्गोरिदम विकसित करने पर रहा जोर

शोध पर खर्च नहीं करते

वक्ताओं ने कहा कि फिलहाल भारतीय उद्योग शोध को बढ़ावा देने के प्रति गंभीर नहीं है। मशीनों में बौद्धिक विकास का दौर फिलहाल भारत में शुरुआती दौर में है। जिससे प्रौद्योगिकी लंबी और खर्चीली भी है। उद्योग जगत के लोग जब शोध को बढ़ावा देने को आगे नहीं आयेंगे तो प्रौद्योगिकी कैसे विकसित होगी।